Theology III Final Review

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 1 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 2 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 3 |  | 4 |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  | 5 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 6 |  |  |  |  |  |  |  | 7 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  | 8 |  |  | 9 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 10 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 11 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 12 |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 13 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 14 |
|  |  |  |  |  |  |  | 15 |  |  |  |  |  |  |  | 16 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 17 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 18 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 19 |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  | 20 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 21 |  |  |  |
|  |  |  |  | 22 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 23 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 24 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 25 |  | 26 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 27 |  |  |  |  |  |  | 28 |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 29 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 30 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **Across**  **2.** Exaggerating accomplishments  **9.** Charitable actions that respond to people’s physical needs and show respect for human dignity.  **10.** The sin of lying while under an oath to tell the truth.  **15.** The belief in supernatural power that comes from a source other than God.  **16.** A call from God to embrace a life of holiness.  **17.** Union of one’s heart and mind with all people.  **18.** A person called by God to the ministry of the education and formation of Christians  **20.** To be exempt from punishment.  **23.** Stories rooted in daily life that use symbolism or allegory as a teaching tool  **24.** Excessive flattery, praise, or admiration for another person.  **25.** Copying someone else’s words or ideas without permission or giving proper credit to the person.  **27.** The desire to accumulate earthly goods beyond what we need.  **28.** A solemn agreement between human beings or between God.  **29.** The belief in and worship of only one God.  **30.** An action that shows deep reverence for something sacred. | **Down**  **1.** Telling false stories to damage the reputation of others  **3.** The quality of being holy, worthy of respect and reverence.  **4.** Resentment or sadness because of another person’s good fortune.  **5.** The conscious and deliberate rejection of a dogma of the Church.  **6.** Speaking disrespectfully  **7.** This type of justice calls for fairness in agreements and contracts between individuals. It is an equal exchange of goods, money, or services.  **8.** The recognition of our deep need for God and the commitment to put God above everything else in life  **11.** Telling people about someone else's shortcomings.  **12.** Freely giving money or material goods to a person who is needy, often by giving to a group or organization that serves poor people. I  **13.** Connected with an official council of the Church  **14.** Assuming the worst in others  **19.** The body of teaching by the Church on economic and social matters  **21.** The guidance, material goods, and care provided by God  **22.** Aramaic word meaning wealth or property.  **26.** The denial of the existence of God. |

   almsgiving       commutative justice       conciliar       corporal works of mercy       envy       greed       mammon       parables       plagiarism       poverty of heart       providence       social doctrine       detraction       calumny       rash judgement       adulation       boasting       catechist       impunity       solidarity       vocation       Atheism       covenant       heresy       magic       monotheism       perjury       profanity       sacred       venerate